आज की मुरली का सार -- Date: 21-05-2014

स्वयं को गरीब से साहूकार बनाने के लिए बाप से अविनाशी ज्ञान रत्न लेने हैं, यह एक-एक रत्न लाखों रुपयों का हैं, इनकी वैल्यु जानकर पढ़ाई पढ़नी हैं. यह पढ़ाई ही सोर्स ऑफ इनकम हैं, इसी से ऊँच पद प्राप्त होगा.

क्या हैं ये अविनाशी ज्ञान रत्न और इस पढ़ाई से कैसे ऊँच पद प्राप्त होगा?

हम भक्ति मार्ग में, अज्ञान काल में जो बातें ठीक से समझते नहीं थे और अंधश्रद्धा के वश हो कर जो सुना वही सच-सच मान कर चलते थे. इसे ज्ञान-सागर, पतित-पावन बाप ने,, ज्ञान से हमें हर बात का सही अर्थ समझाया और पतित से पावन बनने का सही रास्ता बताया. उस हर बात जो बाबा की मुरली में हैं जिसे हमें सही समझ मिलती हैं इसको ही ज्ञान रत्न कहा जाता हैं.

ज्ञान रत्न वह हैं जो भटकी हुई आत्माओं को सच्ची राह बताए, पतित से पावन बनाये और पावन दुनिया का मालिक बनाये. वैसे बाबा की हर मुरली ज्ञान रत्नों से भरी हुई होती हैं. हम आज की मुरली के पहले पेज से कुछ ज्ञान रत्न निकाल कर नीचे दिये हैं.

1. भक्ति मार्ग में जन्म बाई जन्म हम अपने को देह समझते थे, न कि आत्मा. ज्ञान मार्ग में बाबा ने हमें सबसे पहले ये ज्ञान दिया की हम आत्मायें हैं और एक शरीर छोड दूसरा लेते हैं, बाबा ने हमें समझाया हैं कि कैसे हम इस बेहद के सृष्टि चक्र में पार्ट बजाते हैं.

2. आगे भारत में, बूढ़े आदमी को वानप्रस्थ आश्रम में भेजते थे, लेकिन जानते नहीं थे वानप्रस्थ का मतलब क्या हैं. बाबा ने ज्ञान में समझाया की वानप्रस्थ का सही अर्थ हैं, वाणी से परे जाना और इस पुराने शरीर, पुराने संबंध और पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य करना.

3. भक्ति मार्ग में हम गुरु करते हैं की वही हमें सद्गति दिलायेंगे. बाबा ने ज्ञान में समझाया की कैसे ऊन गुरुओं सहित सर्व आत्माओं को एक बाप ही गति-सद्गति दे सकता हैं.

4. बाबा कहते हैं, भक्तों को क्या चाहिए? यह भी किसको पता नहीं हैं. ज्ञान में हमें सब पता हैं की अभी हम क्या बने हैं, हमारा लक्ष्य क्या हैं, इस शरीर छोड़ कर हम कहा जायेंगे, फिर आगे हम कैसे ऊपर से पार्ट बजाने नीचे आयेंगे.

5. भक्ति में हम सब ने रामराज्य और रावणराज्य की कथाएँ बहुत सुनी. ज्ञान में बाबा ने हमें रामराज्य (सतयुग-त्रेता) और रावणराज्य (द्वापर-कलियुग) के बारे में सही समझ दी और कैसे रामराज्य-रावणराज्य की ड्रामा अनुसार स्थापना और विनाश होता हैं, ये बहुत क्लियर करके समझाया हैं.

ऐसे और भी बहुत ज्ञान रत्न, जैसे की आत्मा-परमात्मा की सत्य पहचान, हद-बेहद का वैराग्य....बाबा की हर मुरली से निकाल सकते हैं.

बाबा कहते हैं ये सत्य ज्ञान, भक्ति में दर-दर भटकते हुए भक्तों को देना हैं और सब का कल्याण करना हैं. बाबा ने कहा, युक्ति से ये ज्ञान न्यूज पेपर, मैगजीन के जरिए जन-जन को देना हैं, लेकिन ये ज्ञान समझेंगे भी वही जो सतयुग-त्रेता में आने वाले हैं.

हम जीतने ज्यादा ज्ञान रत्नों को बांटते हैं, ऊतना बाबा हमें और देता हैं और हम सब जानते हैं की ज्ञान-दान ही महा-दान हैं जिसे की हमारा 21 जन्मो का भाग्य ऊँच बनता हैं.

ॐ शांति.